International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 288-292

राजस्थान के लोकदेवता एवं लोकदेवियाँ

डॉ. चित्रा तंवर

संवि. व्याख्याता इतिहास, जगत्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविधालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

मंदिर का अर्थ है घर। सामान्य बोलचाल में हम मन्दिर को देवालय के अर्थ में लेते हैं। देवगृह ऐसा स्थान होता है जहाँ देवता की प्रतिमा या प्रतीक चिन्ह को स्थापित कर भक्तगण अपनी श्रद्धा अर्पित करते हैं। आमतौर से ऐसे मंदिर, धर्म एवं सम्प्रदाय से जुड़े होते हैं और सम्बद्ध धर्मो के मन्दिर इसी श्रेणी में आते है। साथ ही कुछ मंदिर ऐसे भी है जो संतो एवं समाज के महापुरूषों को भी समर्पित किए जाते है और सभी धर्मो एवं सम्प्रदायों के अनुयायी वहाँ आते है। इसके लिए धर्म का बंधन नहीं होता। राजस्थान में भी संतो को समर्पित ऐसे कई मंदिर है जहाँ सभी धर्मावलम्बी जाते है, पूजा करते है, मनोतियां मानते है और पूरी होने पर चढ़ावा चढ़ाते है। इसी के क्रम में मारवाड़ अँचल में इन पाँचों लोकदेवताओं – पाबूजी, हड़बूजी, रामदेवजी, गोगाजी, एवं मांगलिया मेहा जी को राजस्थान के पंच पीर माना जाता है।

पाबू जी

राठौड़ राजवंश के पाबूजी राठौड़ का जन्म वि. सवत् 1341 (13 वीं शताब्दी) में जोधपुर रियारत के फलोदी के निकट कोलूमण्डल में धाँधल एवं केमलदे के यही हुआ था। ये रोठोड़ो के मूल वंश राव सीहा के वंशज थे। इनका विवाह अमरकोट के राजा सूरजमल सोढा की पुत्री सुप्यारदे के साथ हो रहा था कि फेरो के बीच में उठकर अपने बहनोई जीदराव खीचीं से देवल चारणी (जिसकी केशर कालमी घोड़ी पाबूजी मांगकर लाए थे) की गायें छूड़ाने के लिए गये देचूँ गाँव में भयंकर युद्ध हुआ जिसमें पाबूजी वीरगति को प्राप्त हुए, अतः इन्हें गोरक्षक देवता के रूप में जाना जाता है।

प्लेग रक्षक एवं ऊँटों के देवता के रूप में पाबूजी की पूजा जाता है। कहा जाता है कि मारवाड़ में ऊँट लाने का श्रेय पाबूजी को ही है। अतः ऊँटों की पालक राइक जाति इन्हें अपना आराध्य देव मानती है। ये थोरी एवं भील जाति में अति लोकप्रिय है। तथा मेहर जाति के मुस्लमान इन्हें पीर मानकर पूजा करते है। इन्हे लक्ष्मण जी अवतार मानते है। पाबूजी की केशर कालमी थोड़ी एवं बॉयी ओर झुकी पाग के लिए प्रसिद्ध है। इनका बोध चिन्ह भाला है। कोलूमण्ड में इनका प्रसिद्ध मन्दिर है, जहाँ प्रतिवर्ष चैत्र अमावस्या को मेला भरता है। पाबूजी से संबंधित गीत पाबूजी के पावड़े माठ वाद्य के साथ नायक व रेबारी जाति द्वारा गाये जाते है। पाबूजी की पड़ 'नामक जाति के भोपो द्वारा रावणहत्या नामक वाद्य के साथ बाँची जाती है। इनके गुरू रूपनाथ जी थे। जाँदा–डेमा एवं हरमल जी पाबूजी के रक्षक एवं सहयोगी के रूप में जाने जाते है। आशिया मोड़जी द्वारा लिखित पाबू प्रकाश पाबूजी के जीवन पर महत्वपूर्ण रचना है।

गोगा जी

चौहान वंशीय गोगाजी का जन्म 11 वीं सदी में चूरू जिले के ददेखो नामक स्थान पर जेवर सिंह एवं बाछल के घर हुआ था। गोगाजी ने गौ रक्षा एवं मुस्लिम आक्रान्ताओं (महमूद गजनवी) से देश की रक्षार्थ अपने प्राण न्यौछावर कर दिए, इसलिए इन्हें लोक देवता के रूप में पूजा जाता है इन्हें जाहरपीर के रूप में भी पूजा जाता है। इन्हें साँपों का देवता माना जाता है। राजस्थान का किसान वर्धा के बाद हल जोतने से पहले गोगाजी के नाम की राखी 'गोगा राखड़ी' हल व हाली, दोनो को बांधता है। इन्हें सर्पदंश के बचाव हेतु पूजा जाता है। गोगाजी का थान 'खेजड़ी वृक्ष के नीचे होता है, जहाँ मूर्ति स्वरूप पत्थर पर एक सर्प की आकृति अंकित होती है। गोगाजी के जन्म स्थल देदरेचा को शीर्ष मेड़ी तथा समाधि स्थल 'गोगा मेड़ी' (नोहर हनुमानगढ़) को धूरमेड़ी' कहा जाता है। गोगामेड़ी में प्रतिवर्ष भार्द्रपद कृष्ण नवमी (गोगानवमी) को विशाल मेला लगता है। साँचोर (जालौर) में गोगाजी की ओल्डी नामक स्थान पर गोगाजी का मन्दिर है। गोगाजी की सवारी नीली घोड़ी थी। इन्हे गोगा बाप्पा' के नाम से भी पुकारते है। गोगाजी की पूजा भाला लिए अश्वारोही योद्धा के रूप में होती है।

रामदेव जी

सम्पूर्ण राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों मे 'रामा सा पीर' रूणीचाराधणी व बाबा रामदेव के नाम से प्रसिद्ध लोकदेवता रामदेवजी का जन्म तँवर वंशीय ठाकुर अजमल जी के यहाँ हुआ। इनकी माता का नाम मैणादे था। ये अर्जुन के वंशज माने जाते है। रामदेव जी का जन्म भाद्रपद शुक्ला द्वितीय सं. 1462 को बाड़मेर की शिव तहसील के उड़काशमेर में हुआ? था तथा भाद्रपद सुदी एकादशी सं. 1515 को इन्होने रूणाली के राम सरोवर के किनारे जीवित समाधि ली थी। रामदेव जी ने समाज मे व्याप्त छुआ–छुत, उँच नीच आदि बुराइयों को दूर कर सामाजिक समरसता स्थापित की थी। अतः सभी जातियों (विशेषतः निम्न जातियों के) एवं सभी समुदायों के लोग इन्हें पूजते है। इन्होने बाल्यावस्था में ही पोकरन इलाके के भैरव नामक को मारकर उसकी अराजकता समाप्त की थी। हिन्दू इन्हे कृष्ण का अवतार मानकर तथा मुस्लमान इन्हें 'समासा पीर' के रूप में इनकी पूजा करते है। रामदेव जी ने कामड़िया पंथ प्रारम्भ किया। इनके गुरू का नाम बालीनाथ था। रामदेवरा (रूणाली) में रामदेवजी का विशाल मंदिर है जहाँ हर वर्ष भाढपद शुक्ला में होती है। एकादशी तक विशाल मेला भरता है। जिसकी मुख्य विशेषता साम्प्रदायिक सद्भावना है क्योंकि यहाँ हिन्दू–मुस्लिम एवं अन्य धर्मो के लोग समानरूप से आते है। इस मेले का दूसरा आकर्षण रामदेवजी की भक्ति में कामड़ जाति की स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला तेरहताली नृत्य है। इनके अन्य मन्दिर जोधपुर के पश्चिम में मसूरिया पहाड़ी पर बिराठियाँ (अजमेर) एवं सुरता खेड़ा (चित्तौड़गढ़) में है।

रामदेव जी के प्रतीक चिन्ह के रूप में खुले चबूतरे पर ताख (आला) बनाकर उसमें संगमरमर या पीले पत्थर के इनके पगल्ये (चरन चिन्ह) बनाकर गाँव–गाँव पूजे जाते है। इनके मेधावल भक्त जनो को रिखिया कहते है। रामदेव जी के भक्त इन्हें कपड़े का बना घोड़ा चढ़ाते है। रामदेव जी का घोड़ा लीला था।

भाद्रपद शुक्ला द्वितीय बाबे री बीज (दूज) के नाम से पुकारी जाती है तथा यही तिथि रामदेव जी के अवतार तिथि के रूप में अधिक लोक प्रचलित है। रामदेव जी के मन्दिर को देवरा कहते है। रामदेव जी ही एक मात्र ऐसे देवता है, जो एक कवि भी थे। इनकी रचित 'चौबीस बाणियाँ प्रसिद्ध हैं। रामदेव जी के नाम पर भाद्रपद शुक्ला द्वितीय व एकादशी को रात्रि जागरण किया जाता है, जिसे जम्मा कहते है। डाली बाई रामदेव जी की अनन्य भक्त थी, जिन्होने रामदेव जी से एक दिन पूर्ण उनके पास ही जीवित समाधि ले ली थी। वहीं डाली बाई का मंदिर है। जिस विशिष्ट योगदान के लिए रामदेव जी की पूजा होती है वह है समाज के सभी जातियों और धर्मो के अनुयायियों के साथ समान व्यवहार। इन्होने छूयाछूत को त्यागकर सबको अपनाया।

तेजा जी

लोक देवता तेजाजी खड़नाल (नागौर) के नाग वंशीय जाट थे। पिताजी ताहड जी एवं माता राम कुंवरी, पत्नी पनेर के रायमल की पुत्री पेमल थी। इन्होने लाछा गुजरी की गायो को मेरो से छुडवाने हेतु अपने प्राणो को त्याग था। सर्पदंश से पीड़ित मनुष्य का तेजाजी के स्मरण से इलाज होता है। तेजाजी के थान सुरसुरा, ब्यावर व सेंदरिया में है। उनके जन्म स्थान खड़नाल में भी इनका मन्दिर है। नागौर जिले के परबतसर गाँव में तेजाजी का विशाल मेला भाद्रपद शुक्ला दशमी को भरता है। तेजाजी की निर्वाण स्थली (किशनगढ़) सुरसुरा में तेजाजी की जागीर्ण निकाली जाती है। तेजाजी के पुजारी को घोड़ला कहा जाता है। तेजाजी की घोड़ी लीलण (सिणगारी) थी।

1734 ई. में जोधपुर के महाराजा अभय सिंह के शासन काल में सुरसुरा से परबतसर का हाकिम तेजाजी की मूर्ति परबतसर ले गए तब से परबतसर तेजाजी का मुख्य स्थल हो गया।

देवनारायण जी

देवजी का जन्म संवत् 1300 में आसींद गांव के बगड़ावत परिवार में हुआ था। वे सवाई भोज एवं सेदू खटाणी के पुत्र थे। इनका बचपन का नाम उदय सिंह था। देवनारायण का घोड़ा लीलागर था, इनकी पत्नी धार नरेश जय सिंह की पुत्री पीपलदे थी। देवमाली (ब्यावर) में इन्होने अपनी देह त्यागी। देवजी का मूल देवरा आसींद (भीलवाड़ा) से 14 मील दूर गोठां दड़ावन में है। इनके प्रमुख अन्य देवरे देवमाली (ब्यावर, अजमेर), देवधाम जोधपुरिया (निवाई टोंक) व देव डूँगरी पहाड़ी (चित्तौड़) मे है। गुर्जर जाति के लोग देवनारायण जी को विष्णु का अवतार मानते है। देवनारायण जी की पड़ गुर्जर भोपों द्वारा बाँची जाती है। देवनारायण जी का मेला भाद्रपद शुक्ला छठ एवं सप्तमी को लगता है। देवनारायण के देवरे में उनकी प्रतिमा के स्थान पर बड़ी ईटों की प्रजा की जाती है। देवनारायण ने गोबर तथा नीम का औषधि के रूप में महत्व स्पष्ट किया। देवनारायण जी पूजा मे नीम की पत्तियाँ जरूर होती है।

हड़बू जी

मारवाड़ के पंच पीरो में से एक हड़बूजी है। हड़बूजी भूंडोल (नागौर) के राजा मेहाजी सांखला के पुत्र थे व मारवाड़ के राज जोधा के समकालीन थे। लोकदेवता रामदेवजी हड़बूजी के मौसेरे भाई थे, जिनकी प्रेरणा से हड़बूजी ने योगी बालीनाथ से दीक्षा ली तथा बाबा रामदेवजी के समाज सुधार के कार्य को उन्होने आजीवन पूर्ण निष्ठा से किया। बेंगटी (फलौदी) में हड़बूजी का मुख्य पूजा स्थल है एवं इनके पुजारी साँखला राजपूत होते है। हड़बूजी के मन्दिर बेंगटी (फलौदी) में हड़बूजी की गाड़ी की पूजा की जाती है। इसी गाड़ी में हड़बूजी पंगुगायो के चारा भरकर लाते थे। हड़बूजी शंकुन शास्त्र के ज्ञाता थे। इनके मंदिर के पुजारी साँखला राजपूत होते है।

मेहा जी मांगलिया

मेहाजी सभी मांगलियों के इष्ट देव के रूप में पूजे जाते है। मेहाजी का सारा जीवन धर्म की रक्षा और मर्यादाओं के पालन में बीता। जैसलमेर के राव राणंगदेव भाटी से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। बावणी (जोधपुर) में इनका प्रसिद्ध है, भाद्रपद में कृष्ण जन्माष्टमी को मांगलिया राजपूत मेहाजी की अष्टमी मनाते है। किरड़ काबरा' घोड़ा मेहाजी का प्रिय घोड़ा था।

कल्ला जी

वीर कल्ला का जन्म विक्रम संवत 1601 में मारवाड़ के सामियाना गाँव में अचलाजी आससिंह के यहाँ हुआ था। इन्हे कई सिद्धियाँ प्राप्त थी। प्रसिद्ध योगी भैरवनाथ इनके गुरू थे। मीराबाई इनकी बुआ थी। चित्तौड़ के तीसरे शाके में अकबर के विरूद्ध लड़ते हुए ये वीरगति को प्राप्त हुए। युद्धभूमि में चतुर्भुज के रूप दिखाई गई वीरता के कारण इनकी ख्याति चार हाथ वाले लोक देवता के रूप में हुई। चित्तौड़गढ़ दुर्ग में कल्लाजी राठौड़ की भैंरवपोल पर एक छतरी बनी हुई है। 'स्नेला' इस वीर का सिद्ध पीठ था। भूत पिशाच ग्रस्त लौग रोगी पशु, पागल कुत्ता, गोयरा, सर्प आदि विषैले जन्तुओं से दंशित व्यक्ति या पशु सभी कल्लाजी की कृपा से संताप से छुटकारा पाते है। इन्हें शेषनाग का अवतार भी माना जाता है। साँभलिया (डूंगरपुर) में इनकी काले पत्थर की मूर्ति स्थापित है। इन्हे योगाभ्यास एवं जडी–बूँटी का ज्ञान था। इनकी कुलदेवी नागनेछी थी।

मल्लीनाथ जी

लोकदेवता के रूप में प्रसिद्ध मल्लीनाथ जी का जन्म 1358 ई. मे मारवाड़ के राव तीड़ा जी (सलखाजी) के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में प्रसिद्ध है। इनकी माता का नाम जाणीदे था। ऐसी मान्यता है कि श्री मल्लीनाथ जी एक भविष्य दृष्टा एवं चमत्कारी पुरूष थे, जिन्होने विदेशी आक्रान्ताओ से जनसाधारण की रक्षा करने एवं जनता का मनोबल बढाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये निर्गुण, निराकार ईश्वर को मानते थे।

तिलवाड़ा में इनका प्रसिद्ध मंदिर है यहाँ हर वर्ष चैत्रकृष्णा एकादशी से 15 दिन का मेला भरता है। जहाँ बड़ी संख्या में पशुओं का क्रय–विक्रय होता है। इनकी रानी रूपादे का मंदिर भी तिलवाड़ा से कुछ दूरी पर मालाजाल गाँव में स्थित है। बाड़मेर के मालाणी क्षेत्र का नाम इन्ही के नाम पर पण है।

देवबाबा

पशु चिकित्सा का अच्छा ज्ञान होने के कारण देव बाबा गूजरों व ग्वालों के पालनहार एवं कष्ट निवारक के रूप में पूजनीय हो गए। भरतपुर के नगला जहाज गाँव में देव बाबा का मंदिर है, जहाँ हर वर्ष भाद्रपद शुक्ल पंचमी तथा चैत्र शुक्ला पंचमी को (वर्ष में दो बार) मेला भरता है।

मामादेव

राजस्थान के लोकदेवताओं में मामादेव एक विशिष्ट लोक देवता है जिनकी मिट्टी, पत्थर की मूर्तियाँ नही होती है बल्कि लकड़ी का एक विशिष्ट व कलात्मक तोरण होता है, जो गाँव के बाहर की मुख्य सड़क पर प्रतिष्ठित किया जाता है। ये मुख्यतः बरसात के देव है। इन्हें प्रसन्न करने हेतु भैसे की बलि दी जाती है।

मल्लीनाथ जी
मल्लीनाथ जी जालौर जिले के अत्यन्त प्रसिद्ध लोक देवता है। इनका वास्तविक नाम गांगदेव राठौड़ था तथा पिता का नाम बीरमदेव था। ये शेरगढ़ (जोधपुर) ठिकाने के शाशक थे। इनके गुरू जालन्धर नाथ थे। जहरीले जन्तुओं के काटने पर इनके नाम का डोरा बांधा जाता था। जालौर के पॉचोटा गॉव के निकट पंचमुखी पहाड़ी के बीच घोड़े पर सवार बाबा तल्लीनाथ की मूर्ति है। जालौर क्षेत्र के लोग इनके आस–पास के क्षेत्र को ओरण मानते है एवं कोई पेड़–पौधा नही काटते है।

वीर बिग्गा जी
लोक देवता बिग्गाजी का जन्म बीकानेर के रीडी गॉव के जाट कृषक रावमोहन एवं सुल्तानी के यहॉ हुआ था। इन्होने सम्पूर्ण जीवन गौ–सेवा में व्यतीत किया और अंत में मुस्लिम लूटेरो से गायो की रक्षा करते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। जाखड़ समाज में इन्हे कुल देवता के रूप में पूजा जाता है।

भूरियां बाबा (गौतमेश्वर)
राजस्थान के दक्षिणी भू–भाग गोडवाण में अरावली श्रृंखलाओं के मध्य दिल्ली अहमदबाद रेलमार्ग के नागर स्टेशन के पास ही पर्वतो में गौतमेश्वर ऋषि महादेव का मंदिर है। भूरिया बाबा शोर्य के प्रतीक है। मीणा जाति इन्हे अपना ईष्ट देव मानती है। मीणा जाति गौतमेश्वर की कमी भी झूठी कसम नही खाते है।

वीर फत्ता जी
वर्तमान जालौर जिले के साधूँ गॉव मे जन्मे वीर फत्ताजी ने लूटेरों से गॉव की रक्षा करते हुए अपने प्राणो की बली दी। साँधू गॉव मे इनका विशाल मन्दिर है, जहॉ भाद्रपद शुक्ला नवमी को मेला लगता है।

बाबा झूँझार जी
स्वतन्त्रता पूर्व सीकर क्षेत्र में इमलोहा गॉव में राजपूत परिवार मे जन्मे झूँझार गॉव में राजपूत परिवार में जन्में झूँझार जी ने अपने भाइयों के साथ मिलकर मुस्लिम लुटेरो से गॉव की रक्षा करते हुए अपने प्राण गवा दिये। प्रतिवर्ष रामनवमी को इनकी स्मृति मे मेला लगता है।

वीर पनराज जी
16 वीं शताब्दी में जैसलमेर के नगा गॉव के क्षत्रिय परिवार में पैदा हुए पनराज जी ने पास के काठौड़ी गॉव के ब्राहण परिवार की गायो को मुस्लिम लुटेरो से बचाते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये और लोक देवता के रूप में अमर हो गये। इनकी स्मृति में पनराजसर गॉव (जैसलमेर) में वर्ष में दो बार भाद्रपद एवं माघ माह में मेला लगता है।

हरिराम जी बाबा
ये सर्प दंश का इलाज करते थे। इनके पिता का नाम रामनारायण व माता का नाम चन्दणी देवी था। इनके गुरू भूरा थे। इनका मन्दिर सुजानगढ़ से नागौर मार्ग पर चाऊ से 3 किलोमीटर पर कच्चे रेतीले टिल्ले पर झौरड़ा गांव मे है।

केसरिया कुंवर जी
गोगाजी के पुत्र जो लोक देवता के रूप में पूजे जाते है। इनका भोपा सर्व दंश के रोगी का जहर मुँह से चूसकर बाहर निकाल देता है। इनके थान पर सफेद रंग का ध्वज फहराते है।

रूपनाथ (झाड़ा)
ये पाबूजी के बड़े भाई बूढोजी के पुत्र थे। इन्होने अपने पिता एवं चाचा की मृत्यु का बदला जींदराव खींची को मारकर लिया। कोलूमण्ड के पास पहाड़ी पर तथा बीकानेर के सिंभूदड़ा (नोखामंड़ी) पर इनके प्रमुख थान स्थान है। हिमाचल प्रदेश में इन्हें बालकनाथ के रूप में पूजा जाता है।

डूंगजी जवाहर जी
ये दोनो भाई शेखावाटी क्षेत्र के धनी लोगों को लूटकर उनका धन गरीबों एवं जरूरत मंदो में बॉट दिया करते थे। अतः इन्हे लोक देवता के रूप में पूजा जाने लगा।

लोक देवियाँ
करणीमाता देशनोक (बीकानेर)
दुनिया में चूहों की देवी के रूप में प्रसिद्ध है। बीकानेर से 35 किलोमीटर दूर देशनोक नामक स्थान पर करणी माता का मन्दिर है। यह बीकानेर के राठौड़ शासको की कुल देवी है। इनका जन्म सुआप गॉव में चारण जाति के श्री मेहा जी के घर हुआ था। करणी माता के मन्दिर में सफेद चूहे काबा कहलाते है। चारण समाज के लोग इन चूहो को अपना पूर्वज मानते है। करणी का मन्दिर मठ कहलाता है। ऐसी मान्यता है कि करणी जी ने देशनोक कस्बा बसाया था। इनकी इष्ट देवी तेमड़ा जी थी। करणी जी के मन्दिर के पास तेमड़ा जी का भी मन्दिर है। कहा जाता है कि करणी देवी का एक रूप सफेद चील भी है। करणी माता के मन्दिर से कुछ दूर नेहड़ी नामक दर्शनीय स्थल है, जहाँ करणी देवी सर्वप्रथम रही। चेत्र एवं आसोज माह के नवरात्रों में करणीमाता का मेला लगता है। राव बीकानेर राज्य की स्थापना इन्ही के आशीर्वाद से की थी।

जीण माता
जीण माता का मंदिर सीकर के दक्षिण में रेवासा गॉव की पहाडियो के समीप है। हर्ष पर्वत पर स्थित शिलालेख के अनुसार इनके इस मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान प्रथम के शासन काल में राजा हट्टड़ द्वारा करवाया गया था जिसमे जीण माता की अष्टभूजी प्रतिमा है। यह चौहानो की कुल देवी मानी जाती है। जीण माता की अष्टभूजी मूर्ति एक अवसर पर अढाई प्याले मंदिरा पान करती थी। जीण माता का मेला प्रतिवर्ष चैत्र तथा अश्विन माह के नवरात्रों में भरता है।

केला देवी
करौली के यदुवंशी राजवंश की कुल देवी। हर वर्ष यहाँ चैत्र मास की शुक्ला अष्टमी को जिकूट पर्वत की चोटी पर लक्खी मेला भरता है। कंस द्वारा देवकी की कन्या का वध करने पर यही कन्या कैलादेवी के रूप में त्रिकूट पर्वत की घाटी में विराजित है। इनके भक्त इनकी आराधना में प्रसिद्ध लांगूरिया गीत गाते है। केला देवी के सामने बोहरा की छतरी स्थित है।

शिला देवी (अन्नापूर्णा) आमेर
इन्हे आमेर के महाराजा मानसिंह प्रथम पूर्वी बंगाल के राजा केदार से लाये थे। जयपुर के कच्छवाह राजवंश की आराध्य देवी है। शिला देवी के मन्दिर में मदिरा एवं चरणामृत भक्तों की इच्छानुसार दिया जाता है। शिलादेवी की प्रतिमा अष्टभुजी है। भगवती महिषासुर मर्दिनी की मूर्ति के उपरी हिस्से पर पंच देवों की प्रतिमाएँ उत्कीर्ण है।

जमुवाय माता
यह ढूढाड़ के कछवाह राजवंश की कुल देवी है। इनका मंदिर जमुवा रामगढ़ में स्थित है।

आईमाता (बिलाड़ा जोधपुर)
आईजी रामदेव की शिष्या थी। इन्होने छुआछूत को दूर कर निम्न वर्ग को ऊँचा उठाने का कार्य किया। सीखी कृषक राजपूत इनको सर्वाधिक पूजते है। आई जी माता ने सिखी कृषक राजपूतो को अपने क्षेत्र में संरक्षण दिया था। आई जी माता नीम वृक्ष के नीचे अपना पंथ चलाया। आई जी का पूजा (थान) स्थल बडेर कहलाता है जिसमें मूर्ति नही होती है। सीखी लोग आई जी के मंदिर को दरगाह कहते है। हर महीने की शुक्ला द्वितीय को पूजा–अर्चना होती है। बिलाड़ा के मन्दिर के दीपक की ज्योति से केसर टपकती है जिसका उपयोग ईलाज के रूप में किया जाता है।

राणी सती (झून्झून्)
अग्रवाल जाति की राणी सती का वास्तविक नाम नारायणी था। इनका विवाह तनधन दास से हुआ था। परन्तु इनकी मृत्यु के बाद (नाराय जी) रानी सती हो गई। रानी सती के मंदिर में हरवर्ष भाद्रपद अमावस्या को मेला भरता है। इन्हे दादीजी भी कहते है।

शीतला माता, चाकसू (जयपुर)
चेचक की देवी के रूप में प्रसिद्ध शीतला माता का अन्य नाम सैठल माता था महामाई भी है। चाकसू स्थित माता के मंदिर का निर्माण जयपुर के महाराजा श्री माधोसिंह जी ने करवाया था। होली के पश्चात् चैत्र कृष्णा अष्टमी को इनकी वार्षिक पूजा होती है एवं चाकसू के मंदिर पर विशाल मेला लगता है। इस दिन लोग बास्योडा मनाते है अर्थात् रात का बनाया ठण्डा भोजन खाते है। शीतला माता की सवारी गधा है। शीलता माता की पूजा खंडित प्रतिमा के रूप में की जाती है। सभी देवियों मे ऐसी जो खण्डितरूप में पूजी जाती है। इनके पुजारी कुम्हार जाति के लोग होते है। प्रायः जौटी को शीतला मानकर पूजा की जाती है।

आवड़ माता (जैसलमेर):– चारणी देवी
यह जोगमाया, आईनाथ के रूप में पूजनीय है। जैसलमेर के तेमड़ी पर्वत पर इनका मंदिर है। लोकमानस में सुगनचिड़ी की को आवड़ माता का स्वरूप माना जाता है। आवड़ माता का रेगिस्तान में आगमन वि.स. 888 के आस पास माना जाता है। आवड़ा देवी अपने परिवार के साथ तेमड़ा जा रहा थी। रास्ते में हाकड़ा अथाह जल राशि को पार करने के लिये आवड़ ने तीन चुल्लू आबमन कर उसे सोख लिया, सम्पूर्ण भूमि रेगिस्तान में बदल गई। जब आवड़ा माता तेमड़ा पर्वत पर पहुंची तब वहाँ रहने वाली नरभक्षी राक्षस ने उसकी बहनो पर हमला बोल दिया वे चिल्ला उठी। बाई आई राक्षस है, आवड़ा ने कहा तेमड़ी है अर्थात् मुर्दा है और उस राक्षस का पॉव पकड़कर नीचे फैंक दिया। तभी से वह गैंस एवं पहाड़ तेमड़ी कहलाने लगी। आवड़ा ने लूणराज भाटी को स्वर्ण चूडा दिया और आशीर्वाद दिया कि इस चूड़ा को पहन कर लू युद्ध भूमि में उतरेगा तो अपने अकेले खड्ग से शत्रु सेना को पराजित करेगा।

नागणेचीः– जोधपुर
नागणेची की अठारह भुजाओ वाली प्रतिमा बीकानेर के यशस्वी संस्थापक राव बीका ने स्थापित करवाई थी। नागणेची जोधपुर के राठोड़ो की कुल देवी है।

स्वांगिया (स्वांगृहाणी) – जैसलमेर
जैसलमेर के राज चिन्ह् में स्वांग (भाला) को मुण हुआ देवी के हाथ में दिखाता गया है। जैसलमेर के राजचिन्ह पर सबसे उपर पालम चिड़िया जिसे शंकुन चिड़ी भी कहते है को उपर बैठी हुई दिखाया गया है। यह चिड़िया भी देवी का प्रतीक है। यह देवी जैसलमेर के भाटी राजवंश की कुल देवी मानी जाती है। यादव भाटियो ने जहाँ जहाँ भी राज्य स्थापित किये वहाँ देवी श्री स्वांगिया आई नाथ जी को भी हजारो की संख्यों मे प्रतिमाएँ मिलती है।

छींक माता
राज्य माघ सुदी सप्तमी को छींक माता की पूजा होती है। जयपुर गोपालजी के रास्ते में इनका मंदिर है।

अम्बिका माता
जगत (उदयपुर) में इनका भव्य मंदिर है, जो शक्तिपीठ कहलाती है। जगत का अम्बिका मंदिर मेवाड़ का खजूराहो कहलाता है। यह राजा अल्लट के समय में 10 वीं शती के पूर्वाद में महामारू शैलि में निर्मित है।

सुगाली माता
आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह की कुल देवी सुगाली माता पूरे मारवाड़ क्षेत्र की जनता की आराध्य देवी रही है। इस देवी प्रतिमा में दस सिर एवं चौपन हाथ है। वर्तमान में इनकी मूर्ति अजमेर म्यूजियम में स्थित है।

नकटी माता
जयपुर के निकट जय भवानीपुरा में 'नकटी माता' का प्रतिहार कालीन मंदिर है।

घेवरमाता
घेवर माता का मन्दिर सती मंदिर है। जो राजसमन्द झील की पाल पर स्थित है। इस क्षेत्र में ऐसी लोकोक्ति है कि जब राजसमंद की पाल बन रही थी तो एक पवित्र स्त्री की खोज की गई जिसके बांये गाल पर आँख के नीचे काला तिल हो। अतः मालवा से घेवर बाई को लाया गया और उन्ही के हाथ से राजसमंद पाल पर पहला पत्थर रखवाया गया। घेवर बाई उसी स्थान पर अपने पति के बिना ही सती हो गई।

आमजा–केलवाड़ा
उदयपुर से 80 किमी. दूर केलवाड़ा के पास गाँव रीछड़े में भीलो की देवी आमजा देवी का भव्य मंदिर है। मंदिर में पूजा के लिए एक भील पुजारी तथा दूसरा ब्राहाण पुजारी होता है। पूजा श्री नाथ जी की पूजा पद्धति के अनुसार होती है। प्रतिवर्ष ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष की अष्टमी को मंदिर के अहाते में भव्य मेला लगता है। अष्टमी को रात्रि के 12 बजे भील भोपा बजाते है।

बड़ती माता
बड़ती माता का मंदिर चित्तौड़गढ़ जिले में छीपों के अकोला में बेड़च नदी के किनारे स्थित है। बीमार बच्चे के माता की तोती बाँधने पर उसकी बीमारी ठीक हो जाती है। साथ ही अगर मन्दिर में स्थित दो तिबारियों मे से बीमार बच्चों को निकाला जाये जो बीमारी ठीक हो जाती है।

सचिया माता–ओसियाँ
सचिया माता ओसवालों की कुल देवी है। माता का प्रसिद्ध मंदिर ओसियां नामक नगर में एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है, सचिया माता अर्थात् अपनी कुल देवी का मन्दिर परमार राजकुमार

उपलदेव ने बनवाया था। सचिया माता की वर्तमान प्रतिमा कसौरि पत्थर की है, यह प्रतिमा वस्तुतः महिषासुर मर्दिनी देवी की है।

लटियाला माताजी–लुद्रवा

लटियाल माता जी कल्लो की कुल देवी है। माता का मंदिर फल्लोदी में है। इस मंदिर के आगे खेजड़ा (रामी वृक्ष) स्थित है इसलिये भक्तगण इस लटियाल माता जी को खेजड़ बेरी राय भवानी भी कहते है। माता के मंदिर में अखण्ड ज्योति सदैव जलती रहती है।

आक्षापुरा (आशापुरा)

पोखरण के पास बिस्सा जाति आंशापुरा देवी को अपनी कुल देवी मानते है। प्रतिवर्ष भादवा सूदी दशमी एवं माघ सुदी दसमी को आशापुरा माता का मेला भरता है। बिस्सा जाति की विवाहिता औरते मेहन्दी नही लगाती है।

दधिमति माता

गोठ मांगलोद (नागौर) पुराणो मे इसे कुरूक्षेत्र कहा गया है। पुराणों के अनुसार त्रेतायुग में विकरासुर के वध के लिए भगवती दधिमति ने अवतार लिया था। दधिमति माँ दाधीच ब्राहणो की कुल देवी है।

बाण माता

केलवाड़ा (उदयपुर) मेवाड़ के शासकों की कुल देवी मानी जाती है।

ज्वाला माता

जोबनेर में खगारतो की कुल देवी है।

त्रिपुरा सुन्दरी–तलवाड़ा (बांसवाड़ा)

इसे तरताई माता भी कहते है। पांचाल जाति अपनी कुल देवी के रूप में पूजती है। मंदिर में अष्टादश भूजा की प्रतिमा है जिसने हाथों में अठारह प्रकार के अस्त्र पकड़ रखे है।

आसपुरी–आसपुर (डूंगरपुर)

सुंदा देवी– सुंदा पर्वत (भीनमाल)

आशापुरी/महोदरी माता–मोदंरा (जालौर) में सोनगरा चौहानो की कुल देवी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. राधाकिशन सोनीः राजस्थान के लोक देवता, सूर्या प्रकाशक मंदिर, बीकानेर
2. डॉ. पेमारामः मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक आंदोलन, अर्चना प्रकाशन, अजमेर
3. डॉ. गोपीनाथ शर्माः राजस्थान का इतिहास, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा
4. डॉ. गोपीनाथ शर्माः राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
5. डॉ. गोपीनाथ पूनियाः राजस्थान के गौरवशाली मन्दिर, लिटटेरी सर्किल, जयपुर
6. डॉ. पुष्पा भाटीः राजस्थान के लोक देवता एवं लोक साहित्य, लिटटेरी सर्किल, जयपुर
7. डॉ. प्रेमचन्द गोस्वामीः राजस्थानः संस्कृति कला एवं साहित्य, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।